संगति

भाग – ९

'संगति' लेख की श्रंखला के पिछले 8 भागों में दर्शाया गया है कि —

1. यह सृष्टि अलग-अलग कई प्रकार के तत्वों के **'संयोग', 'मेल' या संगति से बनी है, जो आत्मिक कला अथवा 'शबद' द्वारा चल रही है।**
2. मनुष्य भी **पांच तत्वों का पुतला** है, जिस में **नाम की 'जीवन-रौं'** का संचार है।
3. 84 लाख योनियाँ तो 'ईश्वरीय **'हुक्म'** के भाणे में रहती है, परन्तु मनुष्य को तीक्ष्ण बुद्धि तथा 'मानसिक' स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है, जिस द्वारा वह **'अहम्' के मायिकी भ्रम-भुलाव में अपनी मनमर्जी से बर्ताव करता है**, तथा अपने अच्छे-बुरे कर्मों के परिणाम भोगता है।
4. सृष्टि के समस्त जीवों का अपनी-अपनी श्रेणी के जीवों से मेल करना, इकट्ठे रहना अथवा **'संगति' करना** प्राकृतिक स्वभाव (natural instinct) है ।
5. यह **'मेल' अथवा 'संगति' शारीरिक, मानसिक, भावुक तथा आत्मिक आदि, कई सतहों पर होती है ।**
6. इस 'मेल' अथवा **'संगति'** में विचरण करते हुए हम **एक-दूसरे का 'प्रभाव' लेते-देते हैं ।**
7. **प्रबल मनों का 'प्रभाव' निर्बल मनों पर पड़ना स्वाभाविक है ।**
8. यह मानसिक प्रभाव **'अच्छा' या 'बुरा'** हो सकता है, जिस कारण हमारा जीवन **खुशहाल या दुखदायी हो जाता है ।**
9. तुच्छ रूचियों वाले मलिन **मनमुख व्यक्तियों से 'मेल' को 'कुसंगति' कहा जाता है ।**
10. उत्तम-दैवीय-**गुरमुख प्यारों के 'मेल' को 'संगति' 'सतसंगति' या 'साध संगति' कहा जाता है ।**

11. मायिकी मलिन वृत्ति वाले — **'ईश्वरीय रौं से टूटे' हुए जीवों के 'मेल' या 'संग' करने से हम तुच्छ ख्याल तथा मैली रुचियाँ ग्रहण करते हैं।**

12. दैवीय गुणों वाले गुरमुख प्यारों-**'साध'-'संत'-'हरि जनों' से मेल या 'सत संगति' द्वारा हमारी रुचि दैवीय हो जाती है तथा हमारा जीवन 'आत्मिक रंगत' वाला हो जाता है ।**

उपरोक्त विचार से स्पष्ट है कि मनुष्य के **'जीवन'** का —

अच्छा या बुरा होना
निर्मल या मलिन होना
सुखदायी या दुखदायी होना
प्रफुल्लित या मुरझाया होना
निरोग या रोगी होना
शान्त या अशान्त होना
नेक या बुरा होना
सफल या निष्फल होना
उन्नति या अवनति होना
'आत्म परायण' या 'माया परायण' होना
'रसदायक' या 'फीका' होना
'आस्तिक' या 'नास्तिक' होना
आत्म ज्ञान या मायिकी ज्ञान वाला होना
'गुरमुख' या 'मनमुख' होना

पूर्णतया हमारे **'मेल-मिलाप' अथवा संगति करने पर निर्भर है ।**

जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ।। (पृ. १३६९)

संग सुभाउ असाध साधु पापु पुंनु दुखु सुखु फलु पावै । (वा.भा.गु. ३१/१३)

इस प्रकार शेष 84 लाख योनियाँ तथा भौतिक पदार्थ भी एक दूसरे के 'मेल' या 'संग' द्वारा 'प्रभाव' लेते तथा देते हैं, जैसे कि हवा, पानी-तत्व, एक दूसरे के मेल से ठण्डे-गर्म, लाभदायक या हानिकारक बन जाते हैं। इन वस्तुओं अथवा तत्वों में **निर्णय शक्ति नहीं होती, ये पूर्णतया 'हुकुम' मे रहते हैं ।**

इसी कारण मनुष्यों के लिए **'मेल' या 'संगति' करने** के विषय में छानबीन अथवा **'निर्णय' करना अति आवश्यक है** । परन्तु हमारा **मलिन मायिकी**

'रुचियों' वाला 'मन' सही महत्वपूर्ण 'निर्णय' कर ही नहीं सकता, क्योंकि **मलिन 'मन' का 'निर्णय' भी मलिन रुचियों वाला ही होगा ।**

अपनी वृत्ति अथवा **'रुचि' अनुसार ही हम एक दूसरे की ओर सहज स्वभाव 'आकर्षित' होते हैं ।**

कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले
सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ।। (पृ ३१४)

अमली रचनि अमलीआ सोफी सोफी मेलु करंदे ।
जूआरी जूआरिआ वेकरमी वेकरम रचंदे ।
चोरा चोरा पिरहड़ी ठग ठग मिलि देस ठगंदे ।
मसकरिआं मिलि मसकरे चुगला चुगल उमाहि मिलंदे ।
मनतारू मनतारूआं तारू तारू तार तरंदे ।
दुखिआरे दुखिआरिआं मिलि मिलि आपणे दुख रुवंदे ।
साधसंगति गुरसिखु वसंदे । (वा.भा.गु ५/४)

इस प्रकार मलिन मन में **उच्च-उत्तम 'दैवीय' संगति करने की श्रद्धा ही नहीं उत्पन्न होती तथा न 'आकर्षण' ही प्रतीत होता है** । यदि दैवीय संगति में जाने का मौका भी मिले, तब भी **श्रद्धाहीन मन वहाँ से** लाभ नहीं लेता, बल्कि **जैसे-तैसे कर समय बिताता व दिखावा ही करता है ।**

जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ।।
ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ।।
ओई वलु छलु करि झति कढदे
फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ।। (पृ ३१४)

कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ।।
मनमुखु सचि न भीजई कूडु कूड़ि गडावै ।। (पृ ४१९)

सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ।।
ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ।। (पृ ७५६)

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ।।
मखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ।। (पृ १३६८)

आदि काल से ही गुरुओं-अवतारों पीर-पैगम्बरों ने मनुष्य को सही मानसिक तथा **आत्मिक मार्ग-दर्शन** के लिए आवश्यकता अनुसार **धर्म चलाये** ।

इन धर्मों के प्रचार के लिए अनगिनत **'धर्म स्थान'** बने, जिन में गुणी-ज्ञानी तथा धार्मिक प्रचारक अपने-अपने धर्म अनुसार पाठ-पूजा, कर्म-क्रिया, व्रत-नेम, योग-साधना व **साध-संगति** आदि का प्राचर करते आये हैं ।

पिछले जमाने की तुलना में आज कल — धर्मों, धार्मिक स्थानों, मौखिक प्रचार, लिखित प्रचार, टेपों द्वारा प्रचार, कीर्तन-दरबार, **कथा-वार्ता, मिश्नरी संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं आदि की भरमार है तथा चारों ओर धर्म प्रचार का 'शोर' मचा हुआ है** ।

परन्तु **बेहद प्रचार के 'बावजूद'** जनता की बहुसंख्या धर्म में **'रुचि' या 'निश्चय'** नहीं रखती तथा धार्मिक समागमों में **संगति करने** के लिए जाने से हिचकिचाती अथवा संकोच करती है।

साधारणतया यदि कोई धर्म स्थानों में सत्संग करने के लिए जाते भी हैं, तो वे —

रीसो-रीसी
देखा-देखी
लोक दिखलावे के लिए
गरज की पूर्ति के लिए
दुखों की निवृत्ति के लिए
अवगुण छुपाने के लिए
चौधरपुन की लालसा के लिए
दिमागी सींग अड़ाने के लिए
ज्ञान घोटने के लिए
'वाह-वाह' की लालसा के लिए
राग-कला के प्रदर्शन के लिए
यम से बचने के लिए
नरक से बचने के लिए

ही जाते हैं ।

ऐसी **दिखावटी धार्मिक 'संगति'** करने वाले जीव **अहम्वादी मैं-मेरी की 'रंगत' वाले होते हैं** — जिस कारण इनका मानसिक तथा आत्मिक **जीवन**

उत्तम तथा दैवीय होने की अपेक्षा — मोह-माया के प्रपंच में पलच- पलच कर और भी गिरता जाता है ।

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ।। (पृ १३३)

सावग सुँध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ।।
सूर सुरारदन सुँध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ।।
सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के।।
सी भगवान की भाइ क्रिपा हू ते,
एक रती बिनु एक रती के ।। (सॅवये - 10)

भोजन पकाने के लिए अँगीठी में कोयले प्रयोग किये जाते हैं। इन कोयलों में अग्नि का तत्व होता है — परन्तु इन कोयलों में कई **पत्थर के टुकड़े** भी होते हैं, जिनमें अग्नि तत्व नहीं होता ।

यदि कोयलों में इन **पत्थर के टुकड़ों** की गिनती अधिक हो, तब अँगीठी का सेक कम हो जाता है तथा खाना कच्चा रह जाता है ।

आम प्रचलित सत्संग समागमों में बाहरी दिखलावे की रौनक तो बहुत होती है — परन्तु **आत्मिक जीवन-रौं का 'स्नेह' तथा 'प्रेम- भावना' की कमी होती है**, जिस कारण वहां पाठ-पूजा, **कर्म-क्रिया का 'शोर-शराबा' तो बहुत होता है**, परन्तु यह **धार्मिक कर्मकाण्ड** — रूखे, शुष्क, फोकट, बाहरी तौर पर दिखलावे मात्र, पारवण्ड, देखा-देखी, भावनाहीन, **श्रद्धाहीन, 'प्यार हीन', 'जीवन रौं' हीन, 'जीवन-प्रीत' हीन, 'प्रेम-स्वैपना' हीन ही होते हैं।**

ऐसे रुखे-सूखे, 'दिखावटी सत्संग' समागमों में **जिज्ञासुओं की रूहें आत्मिक सुख तथा प्रेम स्वैपना से 'वंचित' रहती हैं, 'छुह' ही नहीं लगती तथा ईश्वरीय 'रस'-'रंग'-'स्वाद' से भी वंचित रह जाती हैं।** उनके **मानसिक तथा आत्मिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता**, अपितु मायिकी रसातल की ओर अग्रसर हो जाता है ।

ऐसे ईश्वरीय **'जीवन-रौं' से 'टूटे' तथा 'नाम' से 'अछूते'** अथवा **'कोरे' व्यक्तियों के 'जमघट'** को — **'साध संगति' अथवा 'सत संगति' कहना, अनुचित तथा भ्रम है ।**

सदा सहाई संत पेरवहि सदा हजूरि ।।
नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ।। (पृ ३९७)

मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ।।
वेरवदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ।।.....
जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ।।
कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ।। (पृ ९५९)

कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ।।
मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइ ।।
सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ।।
साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ।। (पृ. १४११)

कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जग
स्री भगवान को भेदु न पाइओ ।। (सॅवये पा. १०)

यही कारण है कि **सारी उम्र, अपितु कई जन्मों से** ऐसी **'आत्म रंग' से कोरी तथा 'प्रेम स्वैपना' हीन दिखावटी संगति करते हुए भी हमारे मानसिक तथा आत्मिक जीवन में कोई उत्तम-श्रेष्ठ-सुहाना- दैवीय-परिवर्तन,** उन्नति, साहस, आत्म-रस, आत्म-रंग, आकर्षण, प्रीत, प्रेम, चाव, उल्लास की **'झलक' नहीं दिखती ।**

ऐसी रूखी-सूखी फोकट दिखावटी संगति करते हुए हम **अपने आप में पूर्ण रूप से 'सन्तुष्ट' होते हैं तथा लोगों को भी ऐसी दिखावटी संगति की ओर प्रेरित करते हैं ।**

किसी विद्यक, वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक आदि संस्थाओं का वातावरण महत्ता या उत्तमता — उनके मुखिया, प्रबन्धक, प्रचारक, सेवादारों पर **निर्भर होती है ।** केवल सुन्दर नामों, स्थानों तथा इमारतों की शान ही इन संस्थाओं की अन्दरूनी **श्रेष्ठता या उत्तमता का प्रतीक नहीं हो सकती है ।**

उदाहरण के लिए स्कूल या कॉलिज की सुन्दर इमारत तथा चौगिरदा व गुरु साहिबान की शरवसीयत नमित नाम रखकर **यदि उन में उत्तम पवित्र आत्मिक शिक्षा का धार्मिक माहौल या वातावरण न हो, तब यह सब कुछ**

दिखावा मात्र ही हो जाता है तथा ऐसे विद्यक कालिजों के बच्चे सही **उत्तम- पवित्र धार्मिक अथवा आत्मिक मार्ग-दर्शन से वंचित रहते हैं ।**

'संगति'— शब्द 'आत्मिक मंडल' की अति सूक्ष्म भावनाओं तथा 'प्रेम स्वैपनाओं' के उत्तम-पवित्र ईश्वरीय उपदेशों तथा 'अनंत के सन्देशों' का प्रतीक है। जिस में आत्मिक गुणों का व्यवहार होता है तथा वहाँ — शान्ति है, शीतलता है, प्रीत है, प्यार है, चाव है, आत्म रस है, आत्म रंग है, प्रेम स्वैपना है, शबद है, नाम है, कुशल-मंगल है, सदीवी सुख है ।

जहाँ ऐसे **आत्मिक रंग वाला वातावरण** हो, उसे ही **'सत्संगति' अथवा 'साध-संगति' कहा गया है ।**

परन्तु **'सत्संग' या 'साध-संगति' के विषय में भी 'भ्रान्तियाँ पड़ी हुई हैं,** इन भ्रान्तियों का निर्णय करने की आवश्यकता है ।

साधारण रूप में, साँसारिक व्यक्तियों के समूह को **'साध संगति' या 'सतसंगति'** कहा जाता है — परन्तु गुरबाणी के आशय अनुसार —

बरक्शे हुए
महापुरुषों
संतों
साधु जनों
भक्तों
सिमरन वालों
'शबद-सुरति' वालों
अनहद शबद में लीन हुए
गुरू प्यार में रंगे हुए
'नानक घर के 'गुलाम' बने हुए
'बैरवरीद' सेवक बने हुए
'प्रेम स्वैपना' की मस्ती वाले
'प्रेम रस' में मस्त हुए

'प्रेम प्याले' में नशयी हुए

'चुप-प्रीत' में मतवाले हुए

गुरमुख प्यारों की 'संगति' को ही गुरबाणी में —

सति संगति

साध संगति

दैवीय संगति

उत्तम संगति

पावन संगति

आत्म संगति

सच संगति

गुर संगति

संत मंडली

साध सभा

गुर सभा

उत्तम पंथ

संत सज्जन परिवार

आदि **शब्दों द्वारा सम्मानित किया गया है ।**

गुरबाणी में ऐसी **आत्म रंग वाली 'सत्संगति'** अथवा **'साधसंगति'** की महिमा अपरम्पार दर्शायी गयी है —

सतसंगति कैसी जाणीऐ ।।

जिथै एको नामु वखाणीऐ ।। (पृ ७२)

संत सभा कउ सदा जैकारु ।।

हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ।। (पृ १८३)

संतसंगि हरि मनि वसै ।।

दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ।। (पृ २११)

सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ।।

ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ।।

हरि नामु द्रिड़ावहि हरि नामु सुणावहि
हरि नामे जगु निसतारिआ ।। (पृ३११)

सुंदरु सुघडु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ।। (पृ. ५३१)

हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ।।
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ।। (पृ ६४२)
महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ।।
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ।। (पृ ८०९)

भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ।।
संगति करत संतोखु मनि पाइआ ।। (पु ८८९)

संत मंडल महि हरि मनि वसै ।।

संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ।।

संत मंडल महि निरमल रीति ।।
संतसंगि होइ एक परीति ।।
संतसंति होइ एक परीति ।।
संत मंडलु तहा का नाउ ।।
पारब्रहम केवल गुण गाउ ।। (पृ. ११४६)

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ।।
पारब्रहम की अचरज सभा ।। (पृ १२३५)

परन्तु ऐसी उत्तम पवित्र 'आत्मिक संगति' **गुरू की कृपा तथा भाग्य से ही प्राप्त होती है** —

किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगू ।।
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ।। (पृ. ७१)

संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ।। (पृ ५६)

जा कै हरि धनु सोई सुहेला ।।
प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ।। (पृ. १७९)

किरपा निधि किरपाल धिआवउ ।।
साध संगि ता बैठणु पावउ ।। (पृ १८३)

जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ।।
कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ।। (पृ २३९)

करि किरपा सतसंगि मिलाए ।।
नानक ता कै निकटि न माए ।। (पृ २५१)

जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ।।
(पृ १२५२)

वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ।। (पृ २९)

वडभागी हरि संगति पावहि ।।
भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ।। (पृ ९५)

पूरन भाग भए जिसु प्राणी ।।
साधसंगि मिले सारंगपाणी ।। (पृ १०८)

करमु होवै सतसंगि मिलाए ।।
हरि गुण गावै बैसि सु थाए ।। (पृ १५८)

परन्तु, **दुनिया में ऐसे बख्शे हुए गुरमुख प्यारे 'विरले' ही होते हैं** —

भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ।।
नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ।। (पृ २९७)

दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ।। (पृ ३८४)

जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ।। (पृ ५१७)

जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ।।
हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ।। (पृ ५२०)

ऐसे जन विरले संसारे ।।
गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ।।
आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ।। (पृ१०३९)

हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ।। (पृ. १४११)

मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ।।
नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ।। (पृ ९६६)

सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै, कूड़ी सोइ ।।
नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ।। (पृ. ११००)

ऐसी —उत्तम, पवित्र, नाम-रस, आत्म रंग, जीवन्त, थर-थराती, रुनझुन लगाती, आत्म छुह, प्रेम-पदार्थ का आदान-प्रदान, आत्मिक वाणिज्य व्यापार, अनंत के संदेशों, चुप-प्रीत की भावनाओं, प्रेम स्वैपना के आकाश में उड़ान भरने वाली **संत मंडली** को ही **'साध संगति'** माना गया है।

ऐसी **आत्मिक रंगत वाली 'सत्संगत' अथवा 'साध संगति' के आत्म प्रभाव में जिज्ञासुओं के मन की वृत्तियाँ** —

दुनिया की ओर से मुड़ती हैं

तथा

अपनी आत्मा से जुड़ती हैं ।

ऐसे उत्तम सत्संग अथवा साध संगति मे मन —

शीतल होता है ।
प्रभावित होता है।
आत्म छुह का 'कम्पन' छिड़ता है ।
'कम्पन' में 'रुनझुन' महसूस होती है ।
अन्तर आत्मा की ओर खिंचाव पड़ता है ।
'प्रेम तरंगें' छिड़ जाती हैं।
'प्रेम स्वैपना' की सूक्ष्म 'थरथराहट' होती है ।
आत्म प्यार 'उमड़ता' है ।
'प्रीत भावनाओं' की उड़ान भरता है ।
'प्रेम-प्रकाश' में लीन होता है ।
'प्रेम-रस' के 'सूक्ष्म तरंग' अनुभव करता है ।
ईश्वरीय राग की 'धुन' छिड़ती है ।
'अनहद धुन' सुनायी देती है ।
'अनहद शबद' की 'रुनझुन' छिड़ती है ।
'ईश्वरीय नाद' में 'मग्नता' आती है ।
'मग्नता' में 'बेखुदी' होती है ।

'बे खुदी' में 'विस्माद' होता है ।
प्रेम-प्याले की 'खुमारी' चढ़ती है ।
'खुमारी' में आँखें 'नशयी' हो जाती हैं ।
नशयी आंखों में आत्मिक चमक होती है ।
चमकती आँखों में 'विनोद' होता है ।
'विनोद' में 'प्यार की झलक होती है ।
प्यार की झलक में 'आकर्षण' होता है ।
ईश्वरीय झलक में 'अनन्त के संदेश' होते हैं ।
ईश्वरीय सन्देश में 'शबद' का प्रकाश होता है ।
शबद के प्रकाश में 'नाम का रस' होता है।
'चुप प्रीत' के सौदे होते हैं ।
आत्म रंग का 'व्यापार' होता है ।
महा रस का 'आदान-प्रदान' होता है ।
'नउ निधि नाम की 'साँझ' होती है ।
'अमृत नाम भोजन' मिलता है।
'खावहि खरचहि रलि मिलि भाई' का व्यवहार होता है ।
मन को 'नावै का रंग' (नाम-रंग) **चढ़ता है ।**

इसलिए **गुरमुख प्यारों का 'मेल' या 'संगति' ही उत्तम ख्यालों तथा ईश्वरीय भावनाओं की 'सांझ', 'आदान-प्रदान' या 'प्रचार' का सरल तथा प्रभावशाली साधन है** । एक दूसरे के मनों पर ख्यालों का **प्रभाव डालने के लिए —**

एक ओर
ख्यालों की दृढ़ता व श्रद्धा भावना की तीव्रता तथा
दूसरी ओर
ग्रहण करने की शक्ति अथवा तीव्र 'भूख' या 'प्यास'
आवश्यक है ।

दृढ़ विश्वास तथा गहरी श्रद्धा भावना वाले 'मनों' के दामनिक आत्मिक प्रभाव से साधारण मनों पर सहज ही प्रभाव पड़ता है ।

जहाँ, किसी साधारण **'संगत'** के समूह में मौखिक दिमागी प्रचार का **प्रभाव थोड़े समय के लिए नाम मात्र सा होता है**, वहाँ आत्मिक जीवन वाले **महापुरुषों की 'दामनिक संगति' में सम्मिलित होने से ही उनमें उत्पन्न तीक्ष्ण तथा दामनिक 'आत्मिक किरणें' — जिज्ञासुओं की रूहों को स्पर्श कर चुप-चाप ही, उन का 'जीवन' बदल सकती हैं ।**

यही नियम **महापुरुषों के 'लेखन' पर भी लागू होता है,** जो उनके आत्मिक **'अनुभवी ज्ञान'** तथा दृढ़ श्रद्धा-भाव से उत्पन्न होता है । ऐसा 'लेखन' **आत्मिक मंडल के 'अनुभवी प्रकाश' का प्रकटाव तथा प्रतीक होता है ।**

ये अनुभवी प्रकाश की 'लिश्कें' अथवा 'ईश्वरीय किरणें' सदा — पवित्र, निर्मल, नवीन, दिव्य 'झलकें' होती हैं, जो अन्य रूहों को प्रभावित तथा 'आत्मिक चिंगारी' द्वारा जागृत करने की शक्ति रखती हैं ।

स्थूल स्तर पर, यदि 'लेज़र रेज़' (laser rays) **धातु की मोटी चादरों को भेद सकती हैं, तथा परमाणु बम्ब से निकली हुई दामनिक किरणें** (dynamic rays) इतनी बरबादी कर सकती हैं, तब बख्शे हुए महा-पुरुषों की **'संगति' में से निकली 'दामनिक आत्मिक किरणें' भी,** माया के मोटे सबल **मानसिक 'आवरण' या भ्रम के काले-घने 'बादल' चीर कर** —

जीव की आत्मा को जा **छूती हैं**

तथा

आत्मिक प्रकाशमय मंडल की 'झलक' (Divine Glimpses) **दिखा सकती हैं !!**

दूसरे शब्दों में, **यदि शक्तिशाली मन — साधारण मन के दिमागी भावों की 'सतह' पर इतना प्रभाव डाल सकता है, तब बख्शे हुए आत्म जीवन वाले महापुरुषों — गुरमुख प्यारों की 'ईश्वरीय किरणें' जिज्ञासुओं की रूहों को — 'स्पर्श' करके 'जगा कर', 'आत्म छुह' द्वारा आत्मिक 'चिंगारी' द्वारा ईश्वरीय 'प्रकाश मंडल' का 'अनुभव' करा सकती हैं ।**

इस प्रकार सच्ची-पवित्र **'सत्संगति' अथवा 'साध संगति'** में से **उत्पन्न किरणें जिज्ञासु की रूह को चुप चाप ही बदल देती है** तथा उन का आत्मिक मंडल में **'नया' जन्म होता है ।**

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ।।
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ।।
(पृ.२०४)

जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ।।
साध सरणि नानक ते आए ।। (पृ २९६)

नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ वासा ।।
हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ।। (पृ ७७४-७५)

धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ ।।
मिल जन नानक नामु परगासि ।। (पृ. १०)

नानक हरि जसु संगति पाईऐ
हरि सहजे सहजि मिलाइआ ।। (पृ. १०४२)
सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ।।(पृ. ९०९)

वडै भागि पाइआ साधसंगु
पारब्रहमु सिउ लागो रंगु ।। (पृ १७८)
वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि।।(पृ. ११९८)

जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ।। (पृ. ८८१)
सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ।।
(पृ. १०४४)

प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ।। (पृ. ३८४)

सुभर भरे प्रेम रस रंगि ।।
उपजै चाउ साध कै संगि ।। (पृ २८९)

नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ।। (पृ. ४५४)

साध कै संगि नही कछु घाल ।।
दरसनु भेटत होत निहाल ।। (पृ २७२)

गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु
मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ।। (पृ ४९२)

ओति पोति रविआ रूप रंग ।।
भए प्रगास साध कै संग ।। (पृ. २८७-८८)

साधसंगि बसतु अगोचर लहै ।।
साधू कै संगि अजरु सहै ।। (पृ २७१)

साधू संगि सिखाइओ नामु ।।
सरब मनोरथ पूरन काम ।। (पृ ३९३)

जनम मरण की मिटी जम त्रास ।।
साधसंगति ऊंध कमल बिगास ।। (पृ. ११४८)

ऐसी उच्च पवित्र आत्मिक सत्संगति अथवा 'साध संगति' के लिए गुरबाणी हमें यूँ याचना करनी सिखलाती है —

साधसंगि प्रभ देहु निवास ।।
सरब सूख नानक परगास ।। (पृ २९०)

हरि जीउ आगै करी अरदासि ।।
साधू जन संगति होइ निवासु ।।
किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ।। (पृ ४१५)

नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीऐ साधू संगि अघाणे राम ।। (पृ ५४१)

हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई
हरि नामु बिड़ावहु इक किनका ।। (पृ६५०)

हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणी।।

(पृ. ६५१)

हरि हरि क्रिपा धारि मधुसूदन
मिलि सतसंगि उेमाहा राम ।। (पृ ६९९)

हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति
हम धोवह पग जन के ।। (पृ ७३१)

कहु नानक प्रभ बरवस करीजै ।।
करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ।। (पृ ७३८-३९)

करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ।
नानक की प्रभ बेनती साधसंगि समाउ ।। (पृ. ७४५-४६)

करि किरपा मोहि मारगि पावहु ।।
साध-संगति कै अंचलि लावहु ।। (पृ ८०१)

कोई आवै संतों हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो
मोहि मारगु दिखलावै ।। (पृ १२०१)

(क्रमश.....)